एक रात की बात

[ग्रामीण साहित्य माला पुष्प–10]

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

एक रात की बात

लेखिका
इन्दु जैन

सम्पादक
डॉ० सुशील 'गौतम'

प्रकाशक
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17 बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग
नई दिल्ली-2

मूल्य : 4 रुपये

यूनेस्को की आर्थिक सहायता से
प्रकाशित

रूप सज्जा :
डॉ० सुशील 'गौतम'

पुस्तक शृंखला संख्या : 127

मुद्रक :
युगान्तर प्रेस
मोरी गेट,
दिल्ली-110006.

भू मि का

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की ओर से ग्रामीण बहिन-भाइयों को ग्रामीण साहित्य माला का दसवाँ पुष्प भेंट करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह साहित्य माला साक्षरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक आवश्यक कदम है। वास्तव में, साक्षरता की मूल समस्या, अक्षर-ज्ञान प्राप्त करने के बाद की समस्या है। व्यक्ति लिखने पढ़ने में निरन्तर कुशल बना रहे उसके लिए आवश्यक है कि अक्षर-ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी लिखने-पढ़ने का अभ्यास जारी रखा जाए। लिखना-पढ़ना जारी रखने के लिए सरल, मोहक, रोचक तथा उपयोगी पुस्तकों का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसका अर्थ यह भी है कि लेखकों को भी यथेष्ट अवसर प्रदान किए जाएं।

जो लोग प्रौढ़ शिक्षा में रुचि रखते हैं और प्रौढ़ों को पढ़ने-लिखने के लिए बढ़ावा देना चाहते हैं उनके लिए सरल, उपयोगी और रोचक सामग्री उत्पादन करना बहुत आवश्यक है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने ग्रामीण जनता के लिए साहित्य-उत्पादन पर विचार-विमर्श करने के लिए, हिन्दी लेखकों की सहायता लेने तथा उनकी एक गोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया।

यह चर्चा, विचार विमर्श तथा गोष्ठी, 4 अगस्त 1978 से 6 अगस्त 1978 तक, नई दिल्ली में, आयोजित की गई। इसका उद्घाटन हिन्दी के जाने-माने लेखक एवं संसद सदस्य श्री भगवती चरण वर्मा द्वारा किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के सचिव श्री लक्ष्मी चन्द जैन ने इसका निर्देशन किया।

जिन मशहूर लेखकों ने इस चर्चा में भाग लिया, उनमें से कुछ ये हैं :

सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, हरिबंश राय 'बच्चन', प्रभाकर माचवे, रमा प्रसन्न नायक, कमला रत्नम्, राजेन्द्र अवस्थी, मन्नू भण्डारी, राजेन्द्र यादव, इन्दु जैन, बालशौरी रेड्डी इत्यादि। कुछ मशहूर प्रकाशकों ने भी अपना-अपना दृष्टिकोण और अपनी समस्यायें प्रस्तुत करने की चेष्टा की। इन प्रकाशकों में से प्रमुख प्रकाशक थे सर्वश्री दीना नाथ मल्होत्रा, यशपाल जैन, कृष्ण चन्द्र बेरी, रघुवीर शरण बंसल, शीला सन्धु इत्यादि।

हम, इन सभी सहयोगियों के आभारी हैं कि उन्होंने कार्यशाला को महान सफलता प्रदान की। उन चर्चाओं के आधार पर ये दस पुस्तकें भेंट करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। हमें पूरी आशा है कि ग्रामीण जन-समाज इसका खुशी से स्वागत करेगा, क्योंकि ये पुस्तकें उन के जीवन से, उन की समस्याओं से, उन के परिवेश एवं उनकी संस्कृति से जुड़ी हैं।

हम यूनेस्को के अत्यंत आभारी हैं कि उन्होंने यह गोष्ठी आयोजित करने के लिए संघ को आर्थिक सहायता प्रदान की।

इस गोष्ठी में, गोष्ठी के निर्देशक श्री लक्ष्मी चन्द जैन के कुशल निर्देशन एवं सूझ-बूझ तथा प्रौढ़ शिक्षा की सम्पादिका श्रीमती बिमला दत्ता की लगन, मेहनत और भाग-दौड़ ने गोष्ठी को सफल बनाने में बहुत सहायता दी। संघ इनका भी बहुत आभारी है।

आशा है कि पाठकों को यह प्रस्तुत ग्रामीण साहित्य माला पसन्द आएगी।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली.
2 अक्टूबर 1978

—शिव चन्द्र दत्ता
अवैतनिक महासचिव

एक रात की बात

कथा-क्रम

		पृष्ठ
1.	भादों की रात ...	7
2.	ढोल की पोल ...	10
3.	मन की आँखें ...	14
4.	बदले की आग ...	19
5.	दूध का दूध और पानी का पानी ...	23
6.	फल मीठा प्रेम का ...	28
7.	कायाकल्प ...	34
8.	जैसे को तैसा ...	38
9.	अंत भला तो सब भला ...	43

भादों की रात

[1]

भादों की रात थी। कई घंटों से लगातार बारिश हो रही थी। रेलगाड़ी के डिब्बे खटाखट-खटाखट करते हुए पटरियों पर तेजी से भागे जा रहे थे। बाहर गहरा अंधेरा छाया हुआ था। डिब्बे के अन्दर हल्की रोशनी थी और सभी यात्री ऊँघ रहे थे। अधिकतर मुसाफिर राजस्थान के थे। उनकी लम्बी-ऊँची काठी थी, बड़ी-बड़ी मूछें थीं और सिर पर पग्गड़ बांधे हुए थे। औरतें रंग-बिरंगी औढ़नियों से मुँह ढके सो रही थीं। छोटे बच्चों-बालियों ने अपने बच्चे छाती से चिपका रखे थे और नींद में झूम रही थीं।

ऊपर के हिस्से में तरह-तरह का सामान भरा हुआ था। छोटी-बड़ी पोटलियाँ ऐसे ताल से हिल रही थीं मानों वो भी नींद ले रही हों। जयपुर से बाड़मेर जाने वाली यह गाड़ी आजकल अजीब नज़ारा दिखा रही थी। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में पिछले सौ सालों से इतनी वर्षा नहीं हुई थी। पिछले साल ही जब यह रेलगाड़ी इस क्षेत्र से गुजरती थी तो उसका लाल रंग रेतीली आँधियों से मैला हो जाया करता था। इस साल तो लगता था जैसे राजा इन्द्र ने अपने घड़े उड़ेल दिए हों। लाल-लाल रेलगाड़ी पानी में चमकती ऐसे इठलाती चली जाती थी जैसे सुहागिन धरती की मांग में सिंदूर की रेखा हो। ऊँट अपनी लम्बी गर्दनें उठा आकाश को आश्चर्य से ताकते रह जाते और धरती के चप्पे-चप्पे पर मोर नाचने लगे थे।

लेकिन हर चीज एक सीमा तक ही सुहाती है। इस साल वर्षा शुरू हुई, रुकने का नाम ही नहीं लेती थी। नाज के सड़ने का डर पैदा हो गया था

और छपाई-रंगाई के सारे काम ठप पड़े थे। चमड़े की ढेरियों पर फफूंद आ गई थी। लोग इस बारिश से तंग आ चुके थे। लेकिन कोई कितना ही तंग क्यों न आ जाए, दुनिया की चाल नहीं रुकती। सो, ऐसे मौसम में भी यह रेलगाड़ी मुसाफिरों से खचाखच भरी चली जा रही थी—खटाखट-खटाखट। और बाहर वर्षा पड़ रही थी—झर-झर, झर-झर।

अचानक इंजन ने ज़ोर की सीटी दी और गाड़ी की चाल धीमी होने लगी। लोग नींद से चौंक पड़े। धीरे-धीरे गाड़ी रुक गई। मालूम हुआ कि आगे रेल की पटरी पानी में डूबी हुई है इसलिए रेलगाड़ी को यहीं रुकना पड़ेगा। जब तक पानी कम नहीं होता गाड़ी आगे नहीं जा सकती। आगे जाने से पूरी की पूरी रेलगाड़ी के बह जाने का खतरा है। इसी लिए गाड़ी एक छोटे से स्टेशन पर रोक दी गई थी। यह सुनते ही सारे डिब्बों में हलचल मच गई।

किसी को कुछ समझ न आता था कि क्या किया जाए। डिब्बे के अन्दर दम घुट रहा था, चिल्लपों मची हुई थी। लेकिन बाहर भी पानी इतना पड़ रहा था कि वहाँ जाना सम्भव नहीं था। इतने में ही सारी बत्तियाँ गुल हो गईं।

अचानक एक औरत चीख पड़ी। उसकी हाय-हाय में यह भी समझ नहीं आता था कि हो क्या गया। वैसे भी वह मारवाड़ी भाषा बोल रही थी। कुछ हल्ला-गुल्ला कम हुआ तो पता चला कि अंधेरे में किसी ने उसके गले पर हाथ डाल दिया। कोई उसकी सोने की चेन खींच रहा था। कई लोगों ने एक साथ माचिस सुलगा ली। देखा कि उसकी सात-आठ साल की बच्ची उसकी गर्दन में हाथ डाले हक्की-बक्की चारों ओर ताक रही है। माँ अपनी बेटी के हाथ को भी पहचान न पाई थी और चोर-चोर का हल्ला मचा दिया था। अंधेरा होते ही इन्सान को इन्सान से ऐसा डर लगने लगता है कि वह अपने-पराए में भेद करना भी भूल जाता है।

डिब्बे में घुटन इतनी बढ़ गई थी कि एक आदमी से रहा न गया। उसने हिम्मत करके दरवाजा खोला और भागता हुआ स्टेशन के छप्पर की तरफ चला गया। उसकी देखा-देखी और भी दो-चार ने हिम्मत की। बीवी-बच्चों वाले मुसाफिर तो उन्हें छोड़ कर जा नहीं सकते थे लेकिन जो छड़े थे उन से अन्दर बैठना मुश्किल हो रहा था।

स्टेशन पर भी अंधेरा था। न कहीं चाय की दुकान, न पान-बीड़ी वाला। वहाँ रात को कोई गाड़ी नहीं रुकती थी इसलिए किसी तरह का प्रबन्ध

नहीं था। फिर भी स्टेशन पर खुलापन था और थोड़ी हवा थी। भीड़ वहाँ भी कम न थी और बारिश से बचने के लिए टीन की छत के नीचे थोड़ी सी ही जगह थी। धीरे-धीरे लोग अपने-अपने डिब्बों में लौटने लगे। →

❋❋❋

ढोल की पोल

[2]

उधर स्टेशन के एक कोने में चार मुसाफिर एक साथ आ इकट्ठे हुए। उन चारों में न उम्र की समानता थी और न ही चारों एक प्रदेश से आए थे। उन में से एक था रामनाथ जो उत्तर प्रदेश का रहने वाला अधेड़-उम्र का किसान था, दूसरा पंजाब का बूढ़ा फौजी बन्ता सिंह था, तीसरा पैंतीस साल का मराठा था, यशवन्त देव जो बम्बई में चौकीदारी करता था और चौथा नागालैंड का नौजवान स्कूल मास्टर था, जो नौकरी की तलाश में दिल्ली होता हुआ जयपुर चला आया था। उसका नाम था सोकुत्सू। ये चारों हिन्दी बोल लेते थे और इसीलिए आपस में बातें शुरू हो गई थीं। ये चारों मुसाफिर उसी डिब्बे में सफर कर रहे थे जिस में एक औरत अंधेरे में चिल्लाई थी। वही बात चल निकली और उत्तर प्रदेश का रामनाथ बोला, "अरे औरतों की कुछ न पूछो। तिरिया-चरित्र दिखाने का कोई अवसर वो हाथ से नहीं जाने देतीं। अच्छे-अच्छों की नाक काट लें।" मराठा यशवन्त राव से न रहा गया। वह बोला, "भैया जी, आप बेकार महिलाओं को बदनाम कर रहे हैं। वह बेचारी तो सचमुच ही डर गई थी। आज-कल समय ही खराब है। अब मुसीबत में लोग दूसरों का साथ देने की नहीं सोचते बल्कि मौका मिलते ही दूसरों को लूट कर अपना घर भरने की सोचते हैं।"

रामनाथ का अपना अनुभव कुछ और ही था। वैसे भी वो उम्र में बड़ा था। उसे यशवन्तराव की बात काटनी अच्छी नहीं लगी। उसने कहा, "भैया, ये ठीक है कि जमाना खराब है लेकिन इसके खराब होने में भी औरतों का सब से बड़ा हाथ है। आज पति को अपनी पत्नी का भी भरोसा नहीं रह गया, फिर बाहर वालों की तो बात ही क्या है ? मैं तुम्हें अपने गाँव का ही एक किस्सा सुनाता हूँ फिर तुम आप ही फैसला कर लेना कि जो मैं कह रहा हूँ, वह सही है या गलत।"

"हमारे गाँव में एक अहीर है। उसकी औरत बड़े व्रत-उपवास करती थी। आज सोमवार का व्रत है तो कल संतोषी माता का और परसों मौनी बाबा का। कभी बच्चों के लिए उपासी बैठी है, तो कभी पति के लिए निराहार है। सारे गाँव में उसकी बड़ाई फैली हुई थी। सब उसको सती भाभी के नाम से पुकारने लगे थे। सब से ज्यादा प्रशंसा उसके पतिव्रता होने की थी क्योंकि हर समय वो दूसरी औरतों को अपने पतिव्रत धर्म के सामने नीचा दिखाया करती थी। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। उस की पड़ोसन का पति परदेस गया हुआ था। सती भौजी पड़ोसन के घर पहुँची तो देखा कि सहेली भोजन कर रही है। उसकी थाली में रोटी, साग, दाल-भात और शक्कर देख कर मुँह बनाने लगी। कहने लगी कि तुम्हारे खाने को देख कर तो ऐसा लगता ही नहीं कि तुम्हारे पति परदेस गए हैं। वो तो वहाँ मारे-मारे फिर रहे हैं और तुम यहाँ पकवान उड़ा रही हो। अगर तुम पतिव्रता होतीं तो पति के वियोग में तुम्हारे गले के नीचे कौर भी न उतरता।"

पड़ोसन ने कहा, "हम तो खाना-पीना छोड़ नहीं सकते। हमारे पति कई महीनों बाद विदेश से लौटेंगे। तब तक कौन सी पतिव्रता हवा-पानी पर जी सकती है ? वैसे भी उनकी गैर हाजिरी में गाय-भैंस, बाल-बच्चों की सारी जिम्मेदारी हम पर ही है। हम वियोग मनाने बैठ जाएंगी तो हाड़-तोड़ मेहनत कैसे करेंगी ? मैं तो दिखावा नहीं कर सकती कि पति नहीं है तो चटनी से रोटी खा कर बैठी रहूँ।"

सती भाभी ने खूब नमक-मिर्च लगाकर पड़ोसन का चरित्र सारे गाँव में बखाना। साथ-साथ अपने त्याग-तपस्या का ढिंढोरा भी पीटती गई। शाम

को पति घर आया तो उससे भी वही बात लेकर बैठ गयी। देखो तो पड़ोसन को, कैसी चटोरी है। पति परदेस में भूखा-प्यासा घूम रहा है और आप बैठी छप्पन पकवान उड़ा रही है। समझाओ तो कहती है कि हम कोई विधवा हैं? हमारा भी जी है—हम भी खा-पीकर मौज मनाएंगी। फिर सती भाभी ने पति के पैर दबाते हुए कहा, "अगर तुम परदेस चले जाओ तो मेरी भूख-प्यास चली जाए। सब कुछ तुम्हारे साथ चला जाए। ये तो कुलच्छनियों के काम हैं। पतिव्रताओं का ये धर्म नहीं।"

सती भाभी का पति बरसों से ये सब सुनता आ रहा था। उसके व्रत-उपवासों को लेकर भी आए दिन टंटा होता रहता था। जब वह शाम को गाय-भैंस इकट्ठी करके लौटा तो घर में घंटी बज रही होती, उसकी पत्नी ऊँचे स्वर में आरती गा रही होती। उसे यह सब अच्छा भी लगता था। लेकिन वह सती की इस बात को नहीं समझ पाया कि कोई औरत अपने पति के चले जाने पर बिना खाए-पिए कैसे रह सकती है? उसने अपनी पत्नी की परीक्षा लेने की ठान ली। सती भी बहुत चतुर थी। उसने अपने पति के मन की बात भांप ली। वह भी पूरी तरह चौकन्नी रहने लगी। पति चौपाल में घंटों बैठा गप्पें लड़ाता रहता, कभी बाज़ार-हाट चला जाता लेकिन कितनी भी देर हो जाए वह पति को खिलाए बिना खाना न खाती। कई महीने यों ही बीत गए और बात आई-गई हो गई।

एक दिन काली-काली घटायें घिरी हुई थीं। ठंडी हवा चल रही थी। सावन का महीना था। पति ने सती से कहा कि आज खाना न पकाओ। आज तो खीर और मीठे पूए खाने का दिल कर रहा है। दोनों व्यंजनों का सती को को भी बहुत शौक था। उसने जोर-शोर से तैयारियाँ शुरू कर दीं। उपलों की सोंधी आग पर देर तक दूध पकाती रही। फिर उसने ढेर सी शक्कर डालकर खूब सारा मेवा उस में डाला। इलायची की खुशबू से आंगन महकने लगा। दूसरे चूल्हे पर माल-पूए तले जाने लगे। लाल-लाल तर माल-पूओं से थाल भर गया। सब तैयारियाँ करके सती ने पति को बुलाया। उसने कहा, "मैं अभी स्नान करके आता हूँ। तुम थाल परोसो।" कुँए पर वह देर तक नहाता रहा। डोल पर डोल पानी सिर पर उंडेलता रहा। उधर सती के पेट में चूहे कूद रहे थे। वह खीर और पूओं की सुगंध से मतवाली हो रही थी।

आखिर पति नहा धोकर लौटा। जैसे ही उसने आंगन में पैर रखा कि गीले फर्श पर उसका पैर फिसल गया। वह धड़ाम से गिरा और उसकी आँखें पलट गई, हाथ-पैर अकड़ गए। स्त्री दौड़ कर पास आई। सिर सहलाया, हिलाया, डुलाया। देखा कि पति की नाक से सांस नहीं आ रही और वह ठंडा पड़ा है। वह समझ गई कि पति परलोक सिधार गए। उसने सोचा कि अभी वह रोने चिल्लाने लगी तो सारा गाँव जमा हो जाएगा। और इतनी मेहनत से बनाए अपने पकवान को वह हाथ भी न लगा सकेगी। उसके भाग तो फूट ही गए, अब अन्न का भी निरादर क्यों किया जाए। यह सोच उसने झट आंगन का दरवाजा बंद किया और थाली में खीर पलट ली। पूए उठा कर उसने छींके में यह सोचकर रख दिए कि उन्हें अगले दिन वह खा लेगी। खीर तो फिर बासी हो जाती है। और ठंडी होते ही वह उसे जल्दी-जल्दी सुड़कने लगी। खा-पी कर उसने झट थाली-बटलोई खंगाली और आंगन का दरवाजा खोल कर छाती पीटने और विलाप करने बैठ गई। सारा गाँव जमा हो गया। सती भाभी सिर पीटती और कहती—"हाय, तुम कहाँ चले गए, मुझ से कुछ कह के तो जाते।" जब उसके पति से न रहा गया तो गुस्से के मारे बोल उठा, "खीर तो सुड़क ली, अब पूए भी लेकर चख ले।" औरत को काटों तो खून नहीं। उसके होश उड़ गए। आज सब के सामने उसकी कलई खुल गई थी। उस की पड़ोसन से रहा न गया। बोली, "बहिन, आज हमने

सचमुच देख लिया कि पतिव्रता कैसी होती है। यह तुम्हारी व्रत-तपस्या ही का फल था कि तुम्हारे स्वामी मरे से जिंदा हो गए।"

मित्रों अब बताओ—यह कांड देखने के बाद औरतों पर कौन विश्वास करेगा ?"

—→

मन की आँखें

[3]

पंजाबी बन्तासिंह ज़ोर से हँस पड़ा। बोला, "बादशाहों बात तो आपकी सच्ची है। औरत बहुत चालाक बनती थी। अपने मर्द को भी उसने भेड़ बना रखा था। अंत में आप ही अपनी चालाकी का शिकार हो गई। लेकिन यह मैं आपको बता दूँ कि औरत अपनी चतुराई से कभी-कभी बड़े-बड़ों का भी दिमाग ठीक कर देती है। एक दिन मैं लाम से छुट्टी पर आया हुआ था। सुबह दतवन करता हुआ बाजार की तरफ निकल गया। वहाँ देखा कि बड़ी-भीड़ लगी हुई है और एक आदमी और औरत में तू-तू मैं-मैं हो रही है। भी तमाशा देखने खड़ा हो गया।

बात ये हुई थी कि एक भंगन टोकरा उठाए घर से निकली तो एक पंडित जी से उसका दुपट्टा छू गया। पंडित जी ने उस की सात पुश्तों को खरी-खोटी सुनानी शुरू कर दीं। लोगों ने बीच-बचाव की बड़ी कोशिश की लेकिन

पंडित जी का गुस्सा काबू में आने का नाम ही न लेता था। तभी, भंगन ने पंडित जी का हाथ पकड़ लिया और बोली, "ये तो मेरे पति हैं, इन्हें मैं अपने घर ले जाऊँगी।" पंडित जी के पसीने छूट गए। कहाँ तो वो गरमा रहे थे,

कहाँ लेने के देने पड़ गए। लगे हाथ-पांव जोड़ने—"मेरा हाथ छोड़ दे। मैं ब्राह्मण, तू शूद्र। मैं तेरा पति कैसे हो सकता हूँ।" भंगन बड़ी तेज थी।

बोली, "अभी उसी दिन ये ही पंडित जी उपदेश दे रहे थे कि क्रोध चंडाल होता है। आज वही चाँडाल पंडित जी के दिल में बैठ गया है। मैं ठहरी जात की चंडालिनी अब आप ही लोग न्याय करें ये मेरे पति हुए या नहीं ? इनके भीतर से चांडाल निकले तो मैं इनका हाथ छोड़ूं।"

मराठा यशवन्तदेव को बन्तासिंह की बात से एक और घटना याद आ गई। उस का भी विचार था कि अपना मन साफ हो तो बिगड़ी बात बन सकती है। इतना ही नहीं, कभी-कभी भटके को राह भी दिखाई जा सकती है। उसने अपनी कहानी शुरू की :

—एक गाँव में एक नेक और भली मुसलमान औरत रहती थी। उसी गाँव में एक फकीर रहता था जिसका धंधा बड़ा गंदा था। वह गड़े मुर्दे उखाड़ लेता और उन के कफ़न उतार कर बेच आता। वह इसी काम से अपना

पेट भरता था। उस भली औरत ने उसे कई बार समझाया कि ऐसा काम नहीं करना चाहिए, यह काम पाप है। लेकिन उसने उसकी एक न सुनी। एक बार वह औरत बीमार पड़ी। उसने फकीर को बुला कर कहा, "मेरे मरने पर मेरी कब्र न खोदना। तुम जितना कपड़ा कहो मैं तुम्हें अभी दे देती हूँ।" फकीर ने वायदा किया और कपड़ा लेकर चला गया।

कुछ समय बाद वह नेक औरत मर गई और दफना दी गई। फकीर आदत के अनुसार उसकी कब्र खोदने लगा। कब्र का पत्थर उठाते ही उसने देखा कि वह औरत फूलों के झूलों में झूल रही है। उसने बढ़िया रेशमी कपड़े और मोतियों के हार पहने हुए हैं। उसके चारों तरफ अच्छे-अच्छे पकवान और इत्र-लोबान सजे हुए हैं। लेकिन उसने देखा कि औरत के गाल पर एक गहरा घाव है। जिससे लहू रिस रहा है। घाव देख कर फकीर को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "माई, तेरे गाल पर यह घाव कैसे हो गया?" नेक औरत की आंखों में आंसू भर आए। उसका सिर शर्म से झुक गया। मंदी आवाज में उसने बताया कि एक बार अपना दांत कुरेदने के लिए उसने अपने मालिक के नीबू के पेड़ से एक कांटा बिना पूछे तोड़ लिया था। उसी कांटे ने नाग बनकर गाल पर डंक मार दिया था।

उसकी बात सुन कर फकीर सिहर उठा। जिस औरत ने जिंदगी भर किसी के साथ बदी नहीं की, एक भूल करने पर उसकी यह दशा? उसे लगा जैसे उसके अपने सारे बदन पर घाव फूट रहे हैं। वह सोचने लगा कि अगर एक कांटा चुराने का फल ऐसा घातक है तो कब्रें खोद-खोद कर कफ़न चुराने की क्या सजा होगी? फकीर की आंखें खुल गईं और उसने अपना गंदा कर्म हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ देने की कसम उठा ली।

सोकुत्सू नागा अब तक चुपचाप बैठा इन सब की बातें सुन रहा था। कई बार उसका बोलने का मन हुआ लेकिन अपनी भाषा के कारण वह शर्म से चुप रह गया। अब और चुपचाप बैठना उसके लिए कठिन हो गया और वह बोल ही उठा, "भाइयों, मैंने किताबें पढ़ कर हिन्दी भाषा सीखी है। अब साल भर से बोलने का अभ्यास भी हो गया है। यदि मेरी बोली में गलतियाँ हों तो मुझे क्षमा कर दीजिएगा। मैं आप सब की कहानियाँ बहुत रुचि से सुन रहा हूँ। रामनाथ जी ने स्त्री को नीच बताया। बन्तासिंह जी ने उसकी

चतुराई की कहानी सुनाई और यशवंतदेव जी ने उसे देवी बना दिया। लेकिन हमारे गाँव में एक लोक-कथा सुनाई जाती है जिसे सुन कर मैं आज तक यह निश्चय नहीं कर पाया कि स्त्री देवी है या दानवी। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी कहानी सुने और मेरी समस्या को सुलझाएँ।"

और यह कह कर नागा स्कूल मास्टर ने अपनी कहानी शुरू की।

बदले की आग

[4]

बहुत पुराने जमाने की बात है संगताम क्षेत्र में लौंगकोंगा नाम की एक विधवा रहती थी। एक दिन वह बैठी कपड़ा बुन रही थी कि उसने एक सारस उड़ता हुआ देखा। वह सोचने लगी, "काश, मुझे इसका एक पंख मिल जाता तो मैं अपने भतीजे के जन्मदिन की दावत में उसे जूड़े पर सजा कर नाचती।" थोड़ी देर में उसने देखा कि सारस का एक पंख उड़ता हुआ उसके ताने-बाने पर आ गिरा। लौंगकोंगा ने उसे देवताओं की अमानत मान कर उठा लिया और अपनी टोकरी में सम्भाल कर रख दिया। थोड़ी देर में उसने पाया कि पंख की जगह एक पत्थर पड़ा है। जैसे ही उसने पत्थर हाथ में लिया वह बांस की खोखली नली बन गया। लौंगकोंगा ने डर कर उसे अपनी झोंपड़ी के एक कोने में फेंक दिया। उसी रात बांस की वह पोरी एक सुन्दर शिशु में बदल गई।

विधवा ने बच्चे को छाती से लगा लिया। उसका नाम रखा पोंगडांग और वह उसे अपने बेटे की तरह पालने लगी। जब वह बड़ा हुआ तब उसकी शादी हुई और उसके भी एक बेटा हुआ जिसका नाम उसकी दादी ने त्सुंगपी रखा। जैसे-जैसे त्सुंगपी बड़ा होता गया उसकी सुन्दरता की चर्चा दूर-दूर तक फैलने लगी। गाँव की सारी लड़कियाँ उसका प्यार पाने के लिए लालायित रहतीं। गाँववालों ने जब देखा कि त्सुंगपी की वजह से लड़कियों में आपसी जलन और होड़ पैदा होती जा रही है तो उन्होंने त्सुंगपी को जान से मार डालने की योजना बनाई।

एक दिन त्सुंगपी को मछली मारने के बहाने वे लोग नदी पर ले गये। साथ में त्सुंगपी का जिगरी दोस्त त्सीतोयांग था। त्सीतोयांग को त्सुंगपी

से अलग करने के लिए उन्होंने उसे नदी के दूसरे किनारे पर भेज दिया और कहा कि "हम मछली मारते जाएँगे–जो मछली हम से बच जाए उसे तुम वहाँ पकड़ते जाना।" मछलियों को मारने के लिए उन्होंने एक नांद में जहर कूटना शुरू किया और त्सुंगपी से उसमें पानी डालने को कहा। जैसे ही त्सुंगपी पानी डालने के लिए झुका उन्होंने उसे नांद में धकेल दिया और जहर के साथ मूसलों से कूट डाला। नदी के दूसरे सिरे पर उसका दोस्त त्सीतोयांग जब मछलियों को ढूँढ रहा था। तब उसके हाथ में एक मनुष्य के पैर का अंगूठा आ गया। अंगूठे को देखते ही उसे शक हो गया। उसने अंगूठे को बड़े प्यार से एक पत्ते में लपेट लिया और अपनी लुंगी की अंटी में खोंस कर चुपचाप वापिस गाँव लौट आया। वहाँ आकर उसने त्सुंगपी को बहुत ढूँढा लेकिन त्सुंगपी जिंदा होता तो उसे मिलता।

उधर लौंगकोंगा भी अपने लाडले पोते की बेचेनी से प्रतीक्षा कर रही थी। आधी रात को त्सीतोयांग उसके पास आया ओर रो-रो कर गाँव वालों की निर्दयता की कहानी सुनाई। पोते का अंगूठा देखकर दादी सन्न रह गई। उसके मन में क्रोध का तूफान उठने लगा। और उसने गाँव वालों से बदला लेने की ठान ली।

अगली सुबह जब सारा गाँव खेतों की कटाई पर गया हुआ था, उसने एक सुअर हलाल किया और गाँव के सारे बच्चों को न्योते पर बुलाया। जिस समय सारे बच्चे खाने में जुटे हुए थे, वह मिठाई लाने का बहाना करके बाहर आई और रसोईघर का दरवाजा बंद कर दिया। उसने देखा दो बच्चे बाहर छूट गए हैं। उसके मन में तो बदले की आग भड़क रही थी। उसने उन बच्चों को भी दावत का लालच दे कर अन्दर धकेल दिया। अभी वह पूरी तरह अन्दर पहुँचे भी नहीं थे कि लौंगकोंगा ने रसोई-घर में आग लगा दी। गांव के सारे बच्चे जल कर राख हो गए। केवल उन दोनों बच्चों की भाग्यवश जान बच गई।

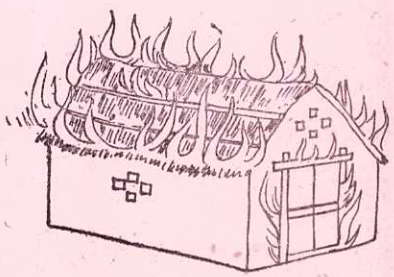

शाम को जब गाँव वाले लौटे तो

सीमा ही पर उन्हें दो बच्चे दिखाई दिए। वे रो-रो कर अपने मां-बाप को पुकार रहे थे। लोगों ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि उनकी काली और जली हुई सूरत को देखकर उन्हें दुत्कारने लगे। इस पर बच्चों को गुस्सा आ गया और वे चीख पड़े, "हमें जी भर कर दुत्कार लो। तुम्हारे घरों में तो बदसूरत बच्चे भी नहीं बचे।"

गाँव वाले यह सुनकर अपने-अपने घरों की ओर भागे। किसी को पूरे गाँव में एक भी बच्चा दिखाई न दिया। तभी उनकी नजर लौंगकोंगा की जली हुई रसोई और उसमें बिखरी हड्डियों पर पड़ी। दुःख और क्रोध से वे अपना सिर पीटने लगे। इसके बाद वे सब के सब लौंगकोंगा को मारने नुकीले भाले और दाओ (दुधारी कुल्हाड़ी) लेकर उसकी झोंपड़ी की तरफ झपटे। बुढ़िया पहले ही से तैयार बैठी थी। उसने अपने झोंपड़े के द्वार पर सुअर की चर्बी छिड़क कर फूंस से ढक दी थी। जैसे ही लोग उसकी झोंपड़ी के द्वार पर उसे मारने के लिए बढ़े फिसल कर गिर पड़े। लौंगकोंगा ने गंडासा उठाया और एक-एक कर सबका काम तमाम कर दिया। अपने पोते की हत्या का बदला इस तरह लेने के बाद लौंगकोंगा ने मौत के देवता से प्रार्थना की कि वे डोरी लटका कर उसे अपने दरबार में बुला लें क्योंकि वह इस निर्दयी संसार में एक पल भी सांस नहीं लेना चाहती। देवता ने उसकी बात सुन ली और डोरी लटका दी लेकिन साथ ही यह भविष्यवाणी भी की कि अगर वह मुड़ कर नीचे की तरफ देखेगी तो रसातल में जा गिरेगी। लौंगकोंगा ने खुशी से यह शर्त मान ली।

जिस समय लौंगकोंगा अधर में पहुँची, धरती से उसके सुअर चीखने लगे, गाय रम्भाने लगी, कुत्ते भौंकने लगे और मुर्गियाँ बांग देने लगीं। उनकी आवाजें सुन कर उसका दिल भर आया। उसका पोता इन जानवरों से कैसे खेला करता था, इनकी कैसी देखभाल किया करता था। साथ ही उसे यह भी ख्याल आया कि अब उसके सारे जानवर दूसरे गाँव वाले उठा कर ले जाएंगे। उसका मन कड़वा हो गया। अनायास उसकी नज़र नीचे खड़े जानवरों की तरफ चली गई। उसने शाप दिया कि सुअर, जंगली-सुअर बन जाएं, गायें सांभर बन जाएं और मुर्गियें गिद्ध बन जाएं ?" अभी वह अपना शाप पूरा भी न कर पाई थी कि भविष्यवाणी के अनुसार डोरी कट गई और लौंगकोंगा

गहरे समुन्द्र में गिर कर पाताल को पहुँच गई। कहते हैं कि तभी से नागालैंड के जंगल इन जानवरों से भर गए।

अब आप लोग बताइए कि लौंगकोंगा क्या सचमुच ही बहुत खराब औरत थी ? अपने पोते की हत्या के बाद उस का दुःख से पागल हो जाना स्वाभाविक नहीं था ?"

दूध का दूध और पानी का पानी

[5]

नागा की कहानी सुनकर तीनों मुसाफिर चुप रह गए। रात के सन्नाटे में इस खून-खराबे से भरी कहानी ने उनके दिल दहला दिए थे। चारों तरफ छायी खामोशी से उनका ध्यान पहली बार इस तरफ गया कि बारिश बंद हो गई है। कहानी में डूबे होने के कारण उन्हें इसका पता न चला था। रेलगाड़ी उसी तरह अंधेरी थी। लगता था जैसे रात का अंधेरा किसी की कजरारी आँख हैं और यह ट्रेन उसमें काजल की पतली रेखा। तभी किसी डिब्बे से एक बच्चे की रोने की आवाज आई और चारों के चारों जैसे चेत गए। नागा ने फिर कहा, "क्यों सरदार जी किसी ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया।"

रामनाथ किसान ने अपने अकड़े हुए पैरों को सीधा किया और आसन बदल कर बोला, "मास्टरजी, पहली बात तो यह कि आप बेकार ही झिझक रहे थे। आपकी हिन्दी तो भई, कमाल की है। मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ लेकिन आपकी मेरी भाषा में कोई अन्तर नहीं। अब रहा आपका सवाल ? सो उसका जवाब अपने खुद ही दे दिया। आपने कहा कि बुढ़िया अपने पोते की हत्या के दुःख में पागल हो गई थी। पागल आदमी को अच्छा या बुरा क्या कहा जा सकता है ?" बन्तासिंह ने गला साफ करते हुए बात में बात जोड़ी, "भैया, पागल आदमी को अच्छा या बुरा न कहो लेकिन उसके काम को तो अच्छा-बुरा कहना ही होगा। मास्टरजी, माना कि दादी को बड़ा दुःख उठाना पड़ा लेकिन बदले में उसने क्या किया ? गाँव भर की संतान को दुःख दिया। उसने यह न सोचा कि जिस दुःख को मैं नहीं सह पा रही उसे दूसरी मां और दादियाँ कैसे सहेंगी ? जो अपनी तकलीफ से दूसरे की तकलीफ न समझ पाए उसे इन्सान कैसे कहा जा सकता है ? इतना बड़ा बदला तो हमने न देखा, न सुना।" नागा बोला, "लेकिन एक बात बताइए गाँववालों ने भी तो

त्सुंगपी की निर्दयता से हत्या की थी। क्या उन्हें बिना सजा के छोड़ देना चाहिए था ?"

रामनाथ, "मास्टर जी, सजा देना काम हमारा नहीं है। पुरानी कहावत है कि जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। भगवान उन्हें उनकी करनी की सजा आप देते।" बन्तासिंह, "मैं आप की बात नहीं मानता रामनाथ भाई। भगवान के फैसले का इन्तजार करके कौन बैठ सकता है ? अगर ऐसा होता तो कोर्ट, कचहरी की क्या जरूरत थी ? पंचायतें क्यों बनाई जाती, कानून की किताबें क्यों लिखी जातीं ? हाँ, ये बात आपकी सही है कि कानून को अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए। बुढ़िया ने गम में अंधे होकर सिर्फ हत्यारों को सजा नहीं दी, भोले-भोले बच्चों को भी जला कर राख कर दिया। उन्होंने क्या कसूर किया था ?"

रामनाथ, "कोर्ट-कचहरी और नियम-कानून सब अनुभव पर बनाए गए हैं। सच्ची बात तो यही है कि अपने लिए एक नियम और दूसरे के लिए दूसरा नियम नहीं बनाया जा सकता। ऐसा होने लगे तो लूट-पाट मच जाए और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का कानून चल निकले। तभी तो कहते हैं कि आज के नौजवानों को उनकी बात सुननी चाहिए जिन्होंने दुनिया देखी है। जो जिन्दगी के ऊँच-नीच से नहीं गुजरा वह न्याय-अन्याय को भी पूरी तरह परख नहीं पाता।

हमारे दादाजी को ही ले लो। कोई नब्बे साल के होंगे। न कमर झुकी है और न आंख की जोत मंदी पड़ी है। दांतों से आज भी अखरोट तोड़ सकते

है। उनकी बुद्धि ऐसी तेज है जैसे गैस का हंडा। उसकी जोत से न जाने कितनी बार उन्होंने गाँव वालों को विपत्ति से बचाया है।

\+ \+ \+ \+

हमारा गाँव पहाड़ी ढाल पर बसा है। पहाड़ी के ऊपर एक दूसरा गाँव बसा हुआ है। एक बार हमारे गाँवों के जंगलों में आग लग गई। कोई भूल से चिलम जलती छोड़ आया था। बस, सूखे पत्तों ने पकड़ ली। आग पूरे जंगल को जलाती हुई पहाड़ी पर चढ़ने लगी और ऊपर वाले गाँव के जंगल

भी जल कर राख हो गए। आग तो आग होती है। एक बार भड़क जाए तो क़ाबू में नहीं आती। लेकिन भैया, गुस्से की आग भी कुछ कम प्रचण्ड नहीं

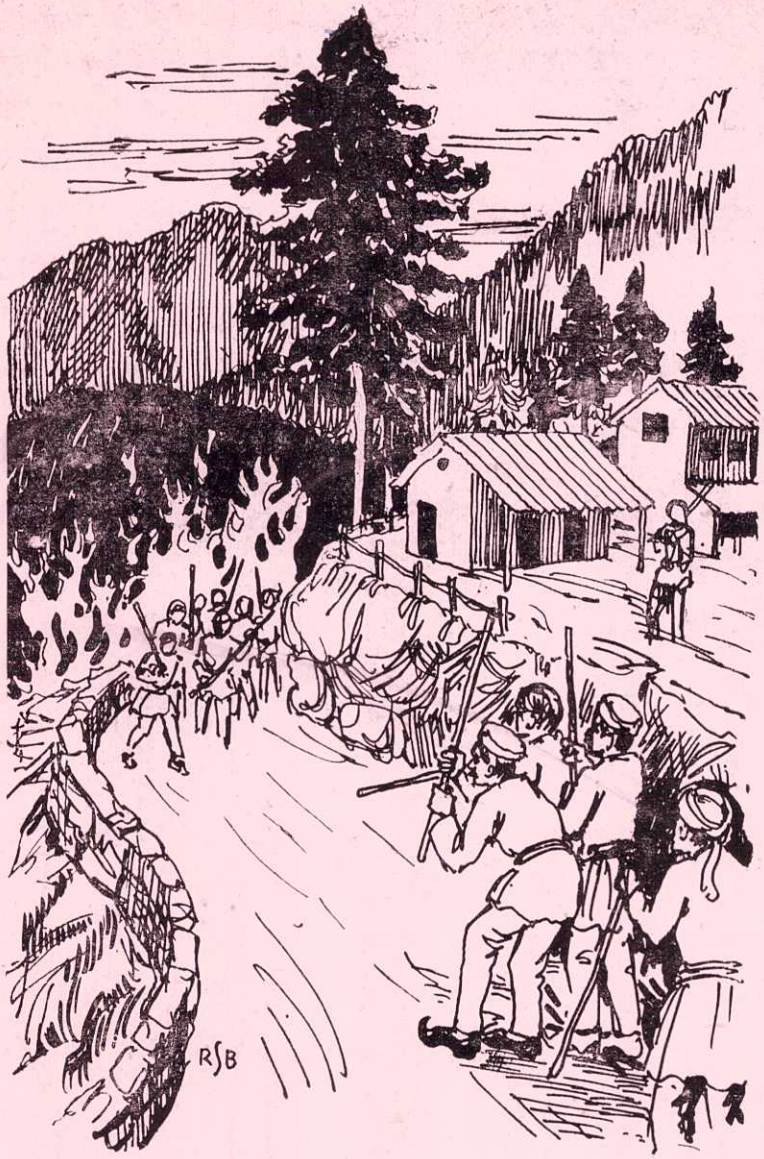

होती। ऊपर से गाँव वाले कुल्हाड़ियाँ ले-लेकर नीचे उतर आए कि तुम्हारे जंगलों की आग ने हमारे सारे व्यापार को भस्म कर दिया। हमारी सारी लकड़ी तुम्हारे कारण जल कर राख हो गई है सो अब तुम्हें सारा हर्जाना भरना पड़ेगा।

बात मानने वाली हो तो मानी जाए। भला छोटा सा हमारा गाँव, उसके अपने जंगल भस्म हो चुके—वह दूसरे के जंगलों का हर्जाना कैसे भरता ?

लेकिन ऊपर वाले अड़ गए। बोले, "हमारा फैसला करो वरना खून-खराबा हो जाएगा।" आखिरकार मामला दादा जी के पास पहुँचा। उन्होंने दोनों तरफ के पाँच-पाँच नौजवानों को अपने पास बिठाया। शान्ति से सारी बात सुनी। सोच विचार कर बोले, "बात तो ठीक है। आग हमारे गाँव से शुरू हुई, हमें हर्जाना भरना होगा।" हमारा गाँव इस फैसले से सकते में आ गया। सब लोग अपना तिनका-तिनका भी बेच देते तो पूरी रकम न भर पाते। अपने यहाँ के नौजवान बड़े भड़के। लेकिन दादा जी पर कोई असर नहीं। वह बार-बार यही कहते जाएँ कि न्याय अंधा होता है। वह अपने पराए में भेदभाव नहीं करता। सारे गाँव के विरोध के बावजूद उन्होंने ऊपर के गाँव वालों से पूरे नुकसान का लेखा-जोखा तैयार करने को कहा। दो दिन लगाकर हिसाब-किताब तैयार हुआ। उनके मुँह में तो पानी आ गया था। सोचते थे, "बुड्ढा सठिया गया है, फायदा उठा डालो।"

दादा जी ने सारा हिसाब समझा। उस के बाद उठ कर के अन्दर गए और एक मोटी बही उठा लाए। बही के रंगे हुए पन्ने दिखा कर बोले, "दोनों पार्टी इस हिसाब को भी समझ लें। पिछले पचास साल से निचले गाँव में बाढ़ आती रही है। उसमें जो-जो हानि हुई है, यह उसकी फहरिस्त है। बाढ़ का हर्जाना ऊपर के गाँव वाले भर दें और नीचे वाले आग का। नदी ऊपर के गाँव से नीचे के गाँव में आती है। उसकी जिम्मेदारी ऊपर वालों पर है।"

ऊपर वाले बड़े भिन्नाए। बोले, "अजी भला नदी की जिम्मेदारी हम पर कैसे है? पानी तो ऊपर से नीचे बहेगा ही, यह तो उसका स्वभाव है।" दादा जी ने नरमाई से उत्तर दिया, "तो भाई, आग की जिम्मेदारी इन पर कैसे हुई? वो तो हवा के साथ ऊपर ही ऊपर चढ़ेगी। यह आग का स्वभाव है।"

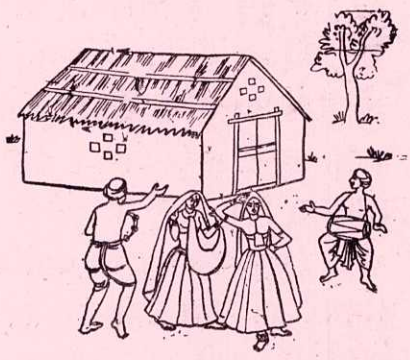

☼☼☼

फल मीठा प्रेम का

[6]

इस दूध का दूध और पानी का पानी जैसे फ़ैसले पर तीनों श्रोता बड़े प्रसन्न हुए। उन्हें लगा कि सचमुच अनुभव और बुद्धि से बढ़ कर मनुष्य का दूसरा दोस्त नहीं हो सकता।

नागा इतनी देर से सारी बातें ध्यान से सुन रहा था। उसने देखा कि यशवन्तराव आँखें मूँदे चुपचाप बैठा है। उसने उसे हिलाकर कहा,...रावजी, आप कुछ नहीं कर रहे। सो गए क्या ?...यशवन्तराव धीरे से मुस्करा दिया और बोला,...मास्टर जी, आज की रात कौन सो सकता है ? मैं तो आप सब की बातें सुन रहा था और सोच रहा था कि अनुभव से ही सहानुभूति जन्म लेती है। जो अपनी बुद्धि से दूसरे के दुख की परख सचमुच करने लगे और उसकी सहायता को खड़ा हो जाए वह सच्चा इन्सान बन जाता है। लेकिन जो अपनी बुद्धि से दूसरों को हानि पहुंचाने पर उतारू हो जाता है वह शैतान कहलाता है।

मनुष्य का सबसे बड़ा गुण यही है कि उसमें विचार-शक्ति होती है। जानवर यह काम नहीं कर सकता। अपने सोच-विचार से ही मनुष्य ने बंदूक बनाई और उसी बुद्धि से मरहम। बंदूक मारती है और दवाई मरते को बचाती है। मेरे विचार से तो मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है। यही हमारा धर्म हमें सिखाता है...

बन्तासिंह को यशवन्तराव की बातें बहुत भली लगीं। उसने यशवन्त

राव की पीठ ठोक कर कहा,..."आप तो बड़े गुणी निकले महाराज। आपको अगर चुनाव में खड़ा कर दिया जाये तो आप अपनी बातों से ही जनता का मन जीत सकते हैं और सारी वोट आपको मिल सकती हैं।" रामनाथ हँस कर बोला,...सरदार जी, आप इन के खिलाफ़ न खड़े हो जाना वरना आप खुद भी इन्हीं को अपना वोट दे आएँगे।"

यशवन्तराव को इस प्रशंसा से बड़ी लज्जा आ रही थी। उस ने बात बदलने के लिए कहा, "आप लोग यदि थक न गए हो तो मैं एक धार्मिक कथा सुना डालूं। इस से यह सिद्ध हो जाएगा कि हमारा धर्म हमें क्या सिखाना चाहता है।"

सभी लोगों को यह प्रस्ताव बहुत पसन्द आया। अभी रेलगाड़ी के चलने के कोई आसार नहीं थे और सूरज निकलने में भी देर थी। पानी की किचकिच के कारण यह भी सम्भव नहीं था कि टाँगें सीधी करके दो-चार करवटें बदल ली जाएँ। न ही कोई जा कर डिब्बे में बन्द होने को तैयार था। ऐसे में बातें करके समय गुजारने से अच्छी सलाह क्या हो सकती थी? सब के हामी भरने पर यशवन्तराव ने कहना शुरू किया :

—हमारे महाराष्ट्र में नाग-पंचमी का त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन व्रत रखा जाता है। गांवों में कोई खुदाई नहीं करता, खेत नहीं जोतता। सब्जियाँ भी काटी नहीं जातीं, बल्कि कुछ लोग तो चाकू ही नहीं बरतते। नाग-देवता की वन्दना की जाती है, बाँबी-पूजन होता है और बाँबियों में दूध चढ़ाया जाता है। इस व्रत की कथा इस प्रकार से है कि किसी समय 'आटपाट' नाम का एक नगर था। उसके पास के किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसके खेत में एक बाँबी थी, जहाँ एक विषधर नागिन अपने संपोलों के साथ वास करती थी। सावन के महीने की पंचमी थी और हर रोज की तरह किसान खेत में हल चला रहा था। किसान के अनजाने ही हल की

नोक से बाँबी गिर गई और हल का फल बाँबी के अन्दर चला गया। फल की रगड़ से नागिन के बच्चे घायल होकर मर गए। नागिन उस समय अपने बच्चों के लिए आहार ढूँढने निकली हुई थी। लौटी तो देखा बाँबी का कहीं पता नहीं। चारों ओर ढूँढते-ढूँढते वह हल पर पहुंची। हल के फल में खून लगा हुआ था। नागिन समझ गई कि संपोलों की हत्या किसान के हल से हुई है। वह क्रोध से फुफकारने लगी। दुख और गुस्से से उसका फन खड़ा हो गया और वह लहराती हुई किसान को डसने आगे बढ़ी। तभी उसे विचार आया कि "किसान को डस कर क्या होगा ? इसे मैं वही दुख दूँगी जो इसने मुझे दिया है तभी मेरा बदला पूरा होगा।"

नागिन ने अपना फन सिकोड़ लिया और वह कुण्डली छोड़ सरसराती हुई किसान के घर की ओर चली। किसान के छोटे बच्चे आँगन में खेल रहे थे और उनकी माँ बैठी गुड़ और मूँगफली पका रही थी। नागिन ने आँगन में जाकर कुंडली लगा ली। उसके बाद वह एक हाथ ऊँची खड़ी होकर फुफकारने लगी। नागिन की फुफकार से बच्चे ऐसे सहमे कि उनके मुख से चीख तक न निकली। नागिन ने फन बढ़ा-बढ़ा कर बच्चों को डस लिया और उसी गुस्से से सरसराती हुई पाठशाला की ओर चल दी। किसान का बड़ा लड़का स्कूल से खाना खाने घर आ रहा था। नागिन उसका रास्ता रोक कर खड़ी हो गई। बच्चे ने जैसे ही डर कर भागना चाहा उसने पलट कर उसे डस लिया और चुपचाप झाड़ियों में सरक गई।

किसान को अचानक इस तरह निर्वंश हुआ देख कर सारे गाँव में सनसनी मच गयी। बड़े-बूढ़े बार-बार कहने लगे कि किसान पर यह विपत्ति उसके किसी पाप-कर्म के कारण ही आयी है किसान की पत्नी छाती पीट-पीट कर रो रही थी। किसान भी रो-रो कर सब से प्रार्थना कर रहा था कि कोई उसकी बेटी को, जो गाँव के पास में ब्याही है, इस दुर्भाग्य की सूचना पहुंचा आए। नागिन ने जब सुना कि किसान की एक बेटी अभी जीवित है तो उसका क्रोध फिर भड़क उठा। वह बावली सी किसान

की बेटी के गाँव की तरफ चल दी। दस कोस चलते-चलते नागिन का दम फूल गया। प्यास से उसका तालू चिपका जा रहा था और अपने बच्चों की याद उसके तन को थरथरा रही थी।

किसान की बेटी आँगन में ही बैठी थी। नागिन ने देखा कि वह पूजा कर रही है। उसकी चौकी पर जो चित्र है उसमें एक नाग और नागिन अपने

नौ बच्चों के साथ बैठे हुए हैं। चौकी पर चाँदी के कटोरे में केसर-बादाम मिला दूध रखा है। नाग-नागिन के चित्र पर चमेली की माला झूल रही है। सारे आँगन में केसर, चमेली और चंदन धूप की सुगंध भरी हुई है। भूखी-प्यासी और थकी-माँदी नागिन सीधे कटोरे पर पहुंची और दूध में मुंह डाल कर सारा

दूध पी गई। तन में ठंडक पड़ने पर उसने कुंडली मारी और फन फैला कर

किसान की बेटी को ताकने लगी। किसान की बेटी ने पूजा पूरी करके आँखें खोली तो विषधर नागिन को सामने फन फैलाए देख उसकी घिग्घी बंध गई।

सापिन का मन किसान कन्या के सर्प-पूजन और प्रसाद से शान्त हो चुका था। वह अपनी बाणी में बोली "बेटी, भय मत कर। मुझे बता कि तुझे साँप की पूजा करने को किसने कहा और तू आँखें बन्द किए हुए क्या प्रार्थना कर रही थी ?"

किसान की बेटी ने हिम्मत करके बताया कि उसके माता पिता ने उसे संसार के सब जीवों के प्रति प्रेम-भाव रखना सिखाया है। उन्होंने ही उसे सर्प पूजन का आदेश दिया है और वह आँखें मूँदे अपने पिता और पति के कुलों की रक्षा की प्रार्थना कर रही थी। यह सब सुन कर नागिन का मन पश्चाताप से भर उठा। वह सोचने लगी "मैंने बड़ा अन्याय किया है। जो परिवार मेरी पूजा करता है। मेरे कुल के लिए खान-पान का प्रबन्ध करता है। उसी परिवार को मैंने निर्वंश कर दिया। किसान

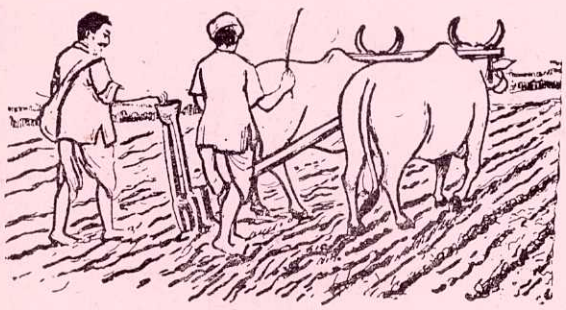

ने जान-बूझकर मेरी बाँबी नहीं तोड़ी। वह हल चला रहा था और भूल से उसका हल मेरी बाँबी में लग गया। असल में गलती मेरी है कि मैंने खेत के बीचों-बीच बाँबी बनाई। मेरे बच्चों की हत्या मेरी अपनी भूल के कारण हुई।"

यह सोच कर नागिन ने सारी बात किसान की बेटी को बताई। अपने भाइयों की मृत्यु का सुनकर बहिन हाहाकार कर उठी। नागिन से उसका दुख देखा न गया उसने जंगल में जाकर अमृत बूटी ढूंढी और उसे किसान कन्या को दे कर फौरन अपने पिता के घर जाने की सलाह दी। बेटी को देख कर किसान और उस की पत्नी फूट-फूट कर रोने लगे। बेटी ने माता-पिता को

दिलासा दी और अमृत बूटी पीस कर अपने भाइयों के ज़ख्म पर लेप दी। थोड़ी ही देर में बूटी ने सारा ज़हर सोख लिया और किसान के बेटे मुस्कराते हुए उठ बैठे।

किसान की बेटी ने जब सारी बात सुनाई तो गाँव का गाँव आश्चर्य-चकित रह गया। यशवन्तराव ने कहा, "व्रत उपवासों की इन कहानियों के पीछे बड़ी-बड़ी सीख छिपी हुई है। साँप की पूजा हमें सिखाती है कि संसार के हर जीव-जन्तु के लिए दया का भाव रखो। सांपिन का मन जिस तरह पलटा, उससे हमें क्षमा की शिक्षा मिलती है।" ——→

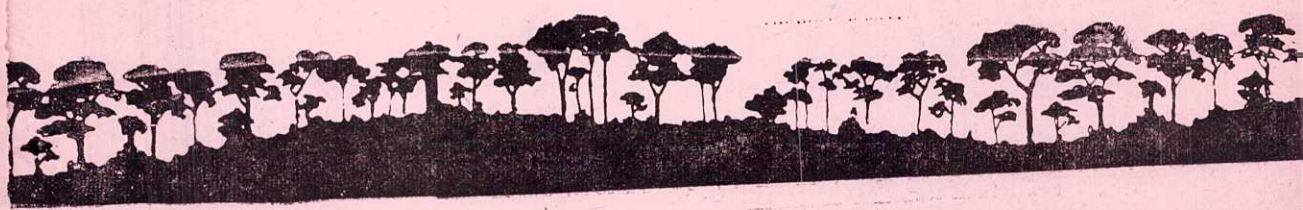

कायाकल्प

[7]

रामनाथ किसान सोच में डूबा हुआ था। उसने कहा, "कठिनाई तो यह है कि इन कथाओं को आज कोई सुनता-पढ़ता ही नहीं। यदि कोई सुन-पढ़ भी लेता है तो गुनता नहीं। उपवास कर लिया, घंटे-घड़ियाल बजा लिए और समझ लिया कि बड़े धर्मात्मा हो गए। आज कल तो मंदिरों में पंडित भी भोग उड़ाने लगे हैं और चंदा खाने में लगे रहते हैं। सच्चा धर्म करना कौन चाहता है ?"

बन्तासिंह हँस पड़ा, "सब तुम्हारे गाँव की सती भाभी हो गए हैं। पतिव्रता-पतिव्रता का शोर मचाते हैं--पतिव्रता क्या होती है यह कोई नहीं जानता।" नागा मास्टर का चेहरा भी चमक रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसे अपने प्रश्न का उत्तर भी मिल गया है। वह बोला, "आप लोग ठीक कह रहे हैं। लेकिन एक बात बताइए। धर्म को समझने के लिए हम अज्ञानी

पंडितों के भरोसे रहते ही क्यों हैं ? उनका तो इसी में लाभ है कि लोग मूर्ख बने रहें और वो उनसे रुपया, कपड़ा ऐंठते रहें। मैं तो कहता हूँ सब को पढ़ना-लिखना चाहिए, जिससे वे अपने आप ये सारी कथायें पढ़ सकें। उसके बाद उन्हें अपने साथियों के साथ मिल-बैठ कर इन के महत्त्व को समझना चाहिए। आज हम चारों ने बैठ कर जो सीखा और जाना है वह कौन पंडित हमें बता सकता है ?"

यशवन्तराव ने मास्टर जी की ही 'हाँ में हाँ' मिलाते हुए कहा, "शिक्षा के महत्त्व के क्या कहने !"

\+ + + +

एक नगर में एक ब्राह्मण रहता था। वह बचपन से ही मूर्ख था। बे-पढ़ा-लिखा होने के कारण बच्चे उसकी हँसी उड़ाया करते थे। दुःख और लज्जा से उसने कुएँ में कूद कर प्राण देने की ठान ली। वह कुएँ में कूदने ही वाला था कि एक साधु ने जाकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "आत्महत्या महापाप है। मनुष्य को हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। तुम तो ब्राह्मण हो और ब्राह्मण विद्वान होता है।"

ब्राह्मण की गर्दन शर्म से झुक गई। वह बोला, "मैं ब्राह्मण होते हुए भी महामूर्ख हूँ, साधु महाराज। इसी दुःख से तो मैं प्राण त्याग रहा हूँ। ऊँचे कुल में जन्म लेकर भी, मैं संसार में कुछ नहीं कर सका। मुझ जैसे बुद्धिहीन को धरती का बोझ बढ़ाने के लिए आपने क्यों बचा लिया ?"

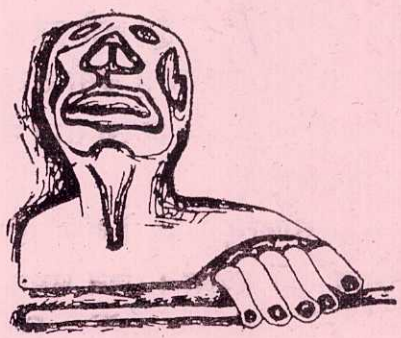

साधु ने समझाया, "बेटा, संसार का हर आदमी कुछ न कुछ करने की शक्ति रखता है। अच्छा, यह बताओ, क्या तुम उपवास रख सकते हो ? ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "अच्छी बात पूछी महाराज। यह गरीब ब्राह्मण तो महीने में बीस दिन भूखे पेट रहता है। फिर उपवास क्यों न रख सकूँगा।"

साधु बोला, "अच्छा, तुम अब से हर बुधवार को उपवास रखा करो। पूजा किया करो। बुधवार के व्रत का यह नियम है कि व्रती को धर्म-पुस्तक भी पढ़नी चाहिए। तुम्हें समझ आए या न आए तुम्हें एक घंटे हर बुधवार शास्त्रों को पढ़ना होगा। बोलो, मेरे कहने से तुम इतना करने को तैयार हो ?" ब्राह्मण ने साधु की बात मान ली। अब आश्चर्य देखिए कि कुछ ही वर्षों में बुधवार का व्रत करते-करते ब्राह्मण ने सारे वेद पढ़ डाले और इस तरह धीरे-धीरे वह महा-पंडित हो गया। यशवन्तराव ने कुछ याद करते हुए कहा, "मैंने एक दोहा कहीं सुना था, जिसमें कहा गया है कि कोशिश करते-करते पत्थर पर भी निशान पड़ जाता है। कुछ ऐसा ही भाव था, ठीक याद नहीं आ रहा है।"
रामनाथ झट बोल उठा,

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।"

चारों मुसाफिर कुछ घंटे पहले एक दूसरे के लिए अजनबी थे और अब एक दूसरे के बहुत पास आ चुके थे। चारों ने एक दूसरे का पता-ठिकाना पूछा और यह वायदा किया कि जीवन में कभी न कभी वे फिर मिलेंगे।

\+ + + +

रात बीत चुकी थी और सूरज का उजाला आकाश पर छा रहा था। यशवंतराव ने उगते सूरज को प्रणाम करके कहा, "हम चारों के प्रदेश अलग हैं, भाषायें अलग हैं और अनुभव भी अलग-अलग हैं। लेकिन कुछ वस्तुयें सबके लिए एक सी होती हैं। जैसे सूरज का उजाला—छोटे-बड़े, आदमी-औरत सब के लिए एक सा फैलता है उसी तरह प्रेम-प्रीत का भाव भी सारे दिलों में वास करता है। उसी के कारण सात समुन्दर पार रहने वाला भी अपना प्यारा मित्र बन जाता है।"

सोकुत्सु नागा ने अंगड़ाई लेकर कहा, "सदियाँ बीत गईं लेकिन मानव-स्वभाव नहीं बदला। जब समय का समुद्र इसे बदल न पाया तो पानी के समुद्र इसे क्या बदल सकेंगे। विलायत में एक बहुत बड़ा नाटक लिखने वाला लेखक हुआ है, जिसका नाम था शेक्सपियर। मैंने उसके अंग्रेजी भाषा में लिखे हुए नाटक पढ़े हैं और यह पाया है कि आदमी विलायत का हो या भारत का

उसके अन्दर एक से भाव हुआ करते हैं। इसी प्रेम, घृणा, लोभ, मोह, ईर्ष्या-द्वेष, बदले की भावना सब मनुष्यों में एक समान हे। इसी तरह चतुराई एक ऐसी ढाल है जिसके सहारे मनुष्य सदा से अपनी और अपने प्रियजनों की रक्षा करता आया है।"

सरदार बन्तासिंह बोला, "मास्टर साहब, आपने अंग्रेजी की किताबें पढ़ी हैं इसलिए आप ऐसी बात कह सकते हैं। लेकिन हमें तो यह लगता है कि इन्सान के खानपान-रहन-सहन और धर्म से उसका स्वभाव जरूर बदल जाता है। हम यह नहीं मानते कि अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी एक स्वभाव के हो सकते हैं। म्लेच्छों में दया-धर्म शर्म, लिहाज कहाँ होते हैं? उनकी औरतों को ही देख लो। सिर ओर टांगें उघाड़े घूमती हैं। अब आप अंग्रेजी पढ़ कर ये कहें कि वे भी सीता और सावित्री हैं तो हम कैसे मान लें?"

यशवन्तराव ने देखा कि सरदार जी अंग्रेजों और भारतीयों की तुलना से भड़क गए हैं। उसके गुस्से को देख कर नागा मास्टर साहब भी अपने से बड़ी उम्रवालों का लिहाज कर चुप हो गए। यशवन्तराव को यह अच्छा नहीं लगा कि इतने प्रेम-भाव से बिताई हुई रात का अन्त इस तरह हो। वह मास्टर जी के बताए विलायती लेखक के बारे में भी जानने के लिए उत्सुक था। यह सब सोचकर उसने बीच-बचाव करते हुए कहा, "सरदार जी, जब रामनाथ, भाई साहब ने औरतों की बुराई की थी तब आपने ही उनका पक्ष लेकर भंगन और ब्राह्मण वाली घटना सुनाई थी और हम ने आपकी बात मान ली थी। अब मास्टर जी भी उस विलायती लेखक के नाटक की कोई कहानी सुना कर इस बात की पुष्टि करें कि विलायत में भी औरतें अपने सगे-सम्बन्धियों को हमारी औरतों की तरह ही चाहती हैं, तो हम उनकी बात मान लेंगे। क्यों नागा मास्टर साहब? है आपके पास कोई ऐसी कथा?"

यशवन्तराव की तरफदारी से नागा मास्टर याकुत्सू को सहारा मिला। वह बोला, "एक नहीं अनेक ऐसी कथाएँ मुझे जबानी याद हैं। मैं आपको लीजिए शेक्सपियर के 'वेनिस नगर के सौदागर' नाटक की कहानी सुनाता हूँ। इससे आपको इस बात का प्रमाण मिल जाएगा कि विलायत में भी स्त्रियाँ कितनी वफादार होती हैं और अपने सगे-सम्बन्धियों को बचाने के लिए बुद्धि के कैसे-कैसे चमत्कार दिखा सकती हैं।"

☆☆☆

जैसा को तैसा

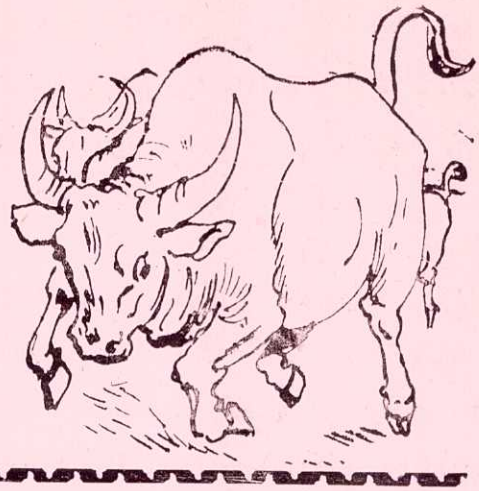

[8]

मास्टर जी ने कहानी आरम्भ की :

बहुत दूर पश्चिम में विलायत का एक नगर है—वेनिस—जो कई नहरों पर बसा हुआ है। उसी नगर में शाइलौक नाम का एक यहूदी व्यापारी रहता था। कठिनाई में पड़े हुए लोगों को ऊँचे सूद पर पैसा दे-देकर वह बहुत अमीर हो गया था। दया-माया उसको छू तक न गई थी। जहाँ वह किसी पर विपत्ति पड़ते देखता, खुशी से वह फूला न समाता और वह यह बात लगाकर बैठ जाता कि मैं इसकी मुसीबत से किस तरह लाभ उठाऊँ। शहर का कोई ही ऐसा आदमी होगा जो कभी न कभी उसके चंगुल में न फंसा हो।

उसी नगर में एन्टोनियों नाम का एक दयालु नौजवान रहता था। वह शाइलौक से बिल्कुल उलटी तबियत का आदमी था। उसे लोगों की सहायता करने में बहुत सुख मिलता था और बिना सूद के कर्जा देने से उसकी प्रसिद्धि सारे शहर में फैल गई थी। शाइलौक इन्टोनियो से बहुत जलता था और हमेशा इस मौके की तलाश में रहता कि किसी तरह एन्टोनियो को नीचा दिखाया जाए।

एक बार एन्टोनियो का जिगरी दोस्त बैसानियो उसके पास आया और बोला, "मैं बेनिस के पास बेलमौट नगर की एक बहुत सुन्दर, विद्वान और ऊँचे कुल की कन्या पोर्शियो से प्रेम करने लगा हूँ और उससे विवाह करना चाहता हूँ। पोर्शिया भी मुझ से विवाह करने को तैयार है लेकिन विवाह कराने के लिए

मुझे तीन हजार सिक्कों की जरूरत है जो मेरे पास नहीं है। यदि तुम वह रकम मुझे कुछ दिन को उधार दे दो तो मेरा जीवन सुखी हो सकता है।"

एन्टोनियो ने उत्तर दिया, "मित्र, तुम्हारे सुख के लिए मैं अपना जीवन भी देने को तैयार हूँ। दैववश आजकल मेरे हाथ में रुपया नहीं है लेकिन माल से लदे मेरे जहाज कुछ ही दिनों में आने वाले हैं। तब तक के लिए मैं शाइलौक से रुपया उधार लेकर तुम्हें दे देता हूँ। जहाज़ों के आते ही मैं उसे उसका धन लौटा दूंगा।" इसके बाद दोनों मित्र शाइलौक के पास रुपया उधार लेने पहुंचे। शाइलौक एन्टोनियो को अपने दरवाजे पर खड़ा देख फूला न समाया। शिकार अपने आप शेर की माँद में आ पहुंचा था।

एन्टोनियो ने अपनी जरूरत शाइलौक को बताई और कहा कि वह सूद की किसी भी दर पर तीन हजार सिक्के कर्ज लेने के लिए उसके पास आया है। शाइलौक को मुँह माँगी मुराद मिल गई। बोला, "मेरे अहोभाग्य जो आप मेरे घर पधारे। मैं तो आपसे दोस्ती करने का बड़ा इच्छुक था। किन्तु आप ही मुझे खराब आदमी समझते थे। आप जितना धन चाहें मुझ से ले जाएँ—मैं आप से सूद नहीं लूँगा।"

शाइकौल के इस व्यवहार पर एन्टोनियों को बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन उसने बिना सूद कर्जा लेना मंजूर न किया। आखिर यह बात तय हुई कि एक वकील के पास जाकर कागज तैयार करवाएँगे। शाइलौक ने उस में लिखवाया कि यदि एन्टोनियो ने निश्चित तारीख तक रकम न लौटाई तो शाइलौक उसके शरीर के किसी भी हिस्से से आधा किलो माँस बदले में ले लेगा। बैसानियो को यह शर्त बिल्कुल पसन्द न आई लेकिन एन्टोनियो ने मित्रता के जोश में उसकी एक न सुनी और शर्तनामे पर हस्ताक्षर कर दिए। धन लेकर बेसानियो बेलमौट शहर चला गया।

मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ और ही है। बेसानियो का विवाह पोर्शिया के साथ तय हो गया। उसे लगता था जैसे उसके जीवन में बहार आ गई है। वह हर समय अपनी प्रेमिका के प्रेम में मगन रहता। एक दिन शाम को वह पोर्शिया के साथ प्रेमालाप में डूबा हुआ था कि उसे एक चिट्ठी मिली। चिट्ठी पढ़ कर बेसानियो का चेहरा पीला पड़ गया। पोर्शिया

को लगा कि जैसे बेसानियो को अपने किसी प्रिय की मौत का समाचार मिला हो। बात थी भी कुछ ऐसी ही। वह पत्र एन्टोनियो का था। उसने लिखा था, "दुर्भाग्यवश मेरे जहाज़ समुद्री तूफान में डूब गए हैं। इधर यहूदी का कर्ज चुकाने की तारीख भी आ पहुँची है। कर्ज चुकाने के बाद मेरे जिंदा रहने की कोई उम्मीद नहीं। मरने से पहले मैं तुम्हें, अपने प्यारे मित्र को, एक बार देखना चाहता हूँ। हो सके तो मुझसे अन्तिम बार मिल जाओ।

पोर्शिया ने पत्र सुन कर एन्टोनियो को दिलासा दिया और कहा कि— हम फौरन शादी कर लेते हैं। इस तरह मेरी सारी दौलत तुम्हारी हो जाएगी। अपना एक-एक पैसा देकर भी हमें एन्टोनियो जैसे मित्र की जान बचानी चाहिए।

अगले ही दिन विवाह करके बेसानियो अपने मित्र के पास जा पहुँचा। उन्होंने सोचा था कि यहूदी शाइलौक बहुत सा धन लेकर एन्टोनियो को कर्ज की शर्त से छुटकारा दे देगा। लेकिन शाइलौक तो एन्टोनियो की मृत्यु चाहता था। वह किसी तरह न माना। आखिरकार मामला अदालत में ले जाया गया। बेसानियो ने शहर का एक नामी वकील एन्टोनियो को तय किया। लेकिन ठीक मुकदमे की तारीख को वह वकील आ न सका और अपनी जगह एक अनजान नौजवान वकील को एन्टोनियो की ओर से पैरवी करने भेज दिया।

वह नौजवान वकील और कोई नहीं खुद पोर्शिया थी जो मर्दानी पोशाक में अपने पति के मित्र के प्राण बचाने अदालत में आई थी। उसने ऐसा

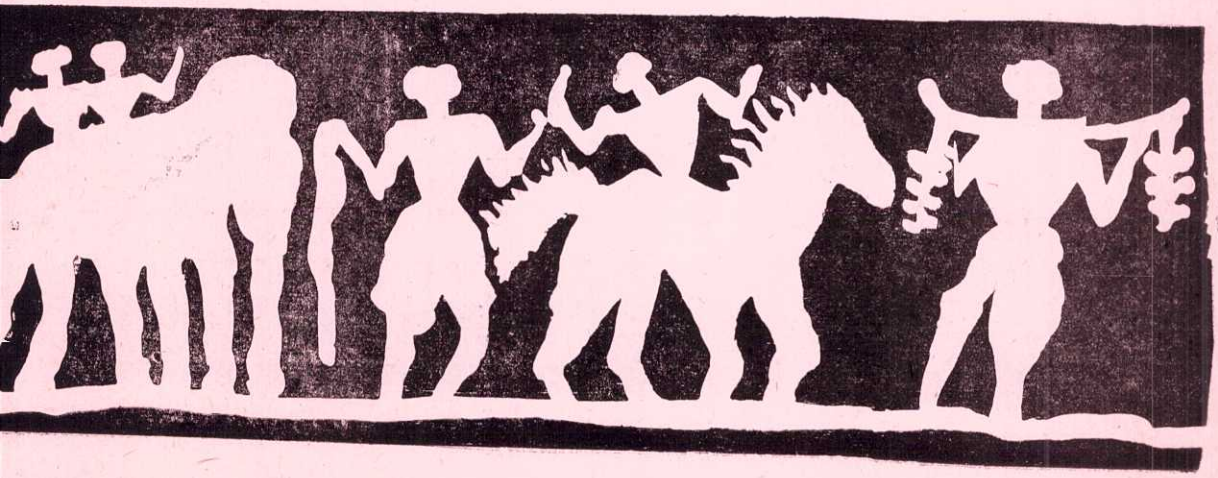

वेष बदला कि स्वयं उसका पति भी उसे पहचान न सका। पोर्शिया ने कहचरी में आते ही सब से पहले शाइलौक से कहा कि वेनिस के कानून के अनुसार शाइलौक को अपना कर्ज़ वसूल करने का हक़ है। लेकिन दया भी कोई चीज होती है। उसे चाहिए कि वह एंटोनियो से अपनी रकम का कई गुना धन लेकर उसे शर्त से रिहा कर दे। शाइलौक ने दया-माया की कोई भी अपील सुनने से साफ इनकार कर दिया। उसका कहना था कि वह तो शर्त के अनुसार आधा किलो मांस लेकर ही दम लेगा। पोर्शिया ने यहूदी को बार-बार समझाया लेकिन जब वह किसी तरह न माना तो पोर्शिया ने कहा, "कानून हर इन्सान से ऊँचा है। वह भगवान की वाणी होती है। इस लिए शाइलौक को इजाजत दी जाती है कि वह एंटोनियो के शरीर से आधा किलो मांस काट ले।"

शाइलौक खुशी से नाचने लगा। उसकी निर्दयता देख कर अदालत में इकट्ठे लोगों का खून जम गया। बेसानियो का सिर चकराने लगा और एंटोनियो का सुन्दर मुख सफेद पड़ गया। उधर शाइलौक बार-बार इस नौजवान वकील को धन्यवाद दे रहा था। उसका काला चोगा चूम रहा था और कह रहा था कि आज साक्षात धर्मावतार पृथ्वी पर आ उतरे हैं। आखिर शाइलौक ने एक लम्बा चमचमाता छुरा अपने झोले में से निकाला और वीरता से खड़े एंटोनियो ने अपनी छाती खोल डाली। सब लोगों ने दुःख और निराशा से आँखें बन्द कर लीं। पोर्शिया ने शाइलौक से कहा, "एक डाक्टर तो बुलवा लो ताकि वह माँस काटे जाने पर एंटोनियो की जान बचा सके।" शाइलौक ने उत्तर दिया, "ऐसी कोई बात शर्तनामे में नहीं लिखी है। मैं डाक्टर नहीं बुलवाऊँगा।" पोर्शिया बोली, "तो ठीक है। हम शर्तनामे के अनुसार ही सब काम करेंगे। बढ़ो...शाइलौक, अपने हिस्से का मांस काट लो।"

शाइलौक ने फुर्ती से छुरा उठा लिया। उसने उसे एंटोनियो की छाती पर रखा ही था कि पीछे पोर्शिया बोल उठी, "यहूदी याद रहे हमें शर्तनामे के अनुसार ही सब काम करना है। तुम आधा किलो मांस काट सकते हो क्योंकि वह क़ानून से तुम्हारा है। लेकिन ख्याल रखना कि एक भी बूंद खून की न गिरे एंटोनियो के खून पर तुम्हारा कोई हक नहीं।"

सारी अदालत सकपका गई। भला कहीं यह भी सम्भव है कि जिंदा इन्सान का मांस काटा जाए और खून की एक बूंद भी न गिरे। शाइलौक क्रोध और निराशा से सर पीटने लगा। सारे दर्शक वकील की प्रशंसा करते हुए शाइलौक का वाक्य दोहराने लगे कि "आज साक्षात धर्मावतार पृथ्वी पर आ उतरे हैं।"

शाइलौक अपने को ही हारा हुआ जान कर खीझ उठा। उसने कहा कि वह अपनी रकम लेकर शर्तनामा फाड़ने को तैयार है। लेकिन अब पोर्शिया अड़ गई। बोली, "नहीं, शर्तनामे के अनुसार तुम्हें एंटोनियो का मांस लेना होगा लेकिन याद रखना, खून न गिरे। और हाँ, जो मांस तुम काटो वह पूरा आधा किलो होना चाहिए—न कम, न ज्यादा। अगर तराजू पर बाल-बराबर भी अन्तर आया तो कानून तुम्हें मौत की सज़ा देगा। तुम्हें फांसी मिलेगी और तुम्हारी सारी ज़ायदाद और धन-दौलत सरकार ज़ब्त कर लेगी।"

शाइलौक यह सुनकर बिलखने लगा। उसने अपने बाल नोचने और कपड़े फाड़ने शुरू कर दिए। वह रो-रो कर गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर दया की भीख मांगने लगा। वहाँ मौजूद सभी लोग उसकी इस हालत का तमाशा देख रहे थे और मन ही मन खुश हो रहे थे। लेकिन पोर्शिया कितनी भी चतुर और विद्वान क्यों न हो, थी तो स्त्री ही। उसका मन पिघल गया और वह बोली, "यहूदी, तुम्हारे बचने का एक ही उपाय है। अगर तुम एंटोनियो के पैर पकड़ कर माफी मांगो और वह तुम्हें क्षमा कर दे तो तुम्हारे प्राण बच सकते हैं।"

शाइलौक एंटोनियो के पैरों में लोट गया। एंटोनियो और बेसानियो नौजवान वकील की चतुराई और उदारता पर मुग्ध हो गए। उन्होंने कहा, "प्राण बचाने की कोई क़ीमत नहीं हो सकती लेकिन हम अपनी कृतज्ञता और

प्रशंसा में अपना सारा धन-दौलत आप पर न्यौछावर करने को तैयार हैं।" वकील ने धन लेने से इन्कार कर दिया। बार-बार इसरार करने पर उसने बेसानियो से कहा, "मुझे अपनी अंगूठी दे दीजिए ताकि वह आपकी यादगार बन कर हमेशा मेरे पास रहे।" बेसानियो उस अंगूठी को बहुत प्यार करता था क्योंकि वह पोर्शिया ने उसे शादी की रात पहनाई थी। लेकिन मित्र के प्राणदाता को वह मना न कर पाया और उसने अंगूठी उतार कर दे दी।"

"मित्रों," नागा ने कहा, "जब वह अंगूठी पोर्शिया ने अपने पति को दी होगी और उसे पता चला होगा कि वह नौजवान वकील उस की बुद्धिमान पत्नी ही थी तो उसे कैसा लगा होगा, आप खुद अंदाजा लगा सकते हैं। लेकिन बताइए आप अब भी आज मेरी बात माने या नहीं कि विलायत की स्त्री भी अपने सगों के लिए जान की बाज़ी लगा सकती है? जब वह एक बार ठान लेती है तो बड़ी से बड़ी चतुराई को नीचा दिखा कर रहती है।"

अंत भला तो सब भला

[9]

बन्तासिंह बोला, "मान गए, मास्टर जी मान गए। भई आपकी कहानी का कोई जवाब नहीं। मर्दों को अक्ल सिखाने में औरत हमेशा ही आगे रही है। आप लोगों ने तो वो कहानी ही सुनी होगी जिसमें बहू ने अपने ससुर की अकल ठिकाने लगाई थी। बात यह हुई कि एक साठे का मन पाठा हो गया। अपनी जवान बहू को नदी में नहाते देख बूढ़े ससुर के मन में खोट आ गया।

बहू चतुर थी। वह ससुर के मन की बात ताड़ गई। एक रात उसने ससुरजी को अपने कमरे में न्योते पर बुलवाया। ससुर महाशय खुशी-खुशी पहुँच गये। बहू ने चौकी बिछा रखी थी। मसनद और गाव तकिए लगे हुए थे। ससुर की आवभगत कर के वह चांदी का थाल उठा कर लाई जिसमें सात कटोरियों में सात रंगों के गोल-गोल फल परसे हुए थे। फिर पंखा झलती हुई बोली, "चख कर बताइए, ये कौन-कौन से फल हैं?" ससुर ने सबको एक-एक करके चखा और नाराज हो कर कहा, "ये तो सारे के सारे नीबू हैं।" बहू बड़े विनय से हाथ जोड़ कर बोली, "पिताजी, संसार की सारी स्त्रियाँ भी एक सी ही होती हैं। सिर्फ रंग-रूप ही अलग-अलग हैं। अन्तर तो नजर का होता है। उसी के चलते नीबू कभी दवा बन जाता है, कभी मीठे के साथ घुल कर शिकंजी, तो कभी वह दांत खट्टे कर देता है। इसी नजर के कारण एक स्त्री माता दिखाई देती है, दूसरी—पत्नी और तीसरी—बेटी। अगर मनुष्य की समझ सही रहे तो उसे जीवन में तरह-तरह के स्वाद मिलते हैं। उसका थाल पकवानों से भरा रहता है। लेकिन जब यह समझ हवा हो जाती तो उसे ऊपरी रंग-रूप तो अलग-अलग दिखाई देते हैं पर मुंह का जायका खट्टे का खट्टा ही बना रहता है। मैं आपके बेटे की पत्नी हूँ और आपकी बेटी। अपनी नियत क्यों खराब करते हैं?"

\+ \+ \+ \+

रामनाथ मुस्करा कर बोला, "सरदार जी, आपकी इस कहानी से तो एक नई बात निकल सकती है। लेकिन आज नहीं—उसके लिए कोई दूसरी रात ढूँढेंगे। अभी तो देखिए, सामने पानी उतर गया है। धूप में रेल की पटरी चांदी की तरह चमक रही है। नागा खड़ा हुआ और बोला, "और वह देखिए, गार्ड साहब झंडी दिखा रहे हैं। इंजन से धुँआ निकल रहा है। रात कब बीत गई कुछ पता ही न चला। हमारी रुकी हुई यात्रा फिर से चालू हो रही है आइए, जल्दी करें।

चारों मित्र अपने डिब्बे की ओर लपके। उनके शरीर सारी रात के जागरण से थके हुए थे लेकिन उनके दिलों में उमंग थी। गाड़ी का रुकना और समय का बर्बाद होना उनके लिए भाई-चारे का धन लेकर आया था। उन चारों के मन में एक ही बात उमड़ रही थी—"भगवान जो करता है, भले के लिए करता है।"

—: o :—

ग्रामीण साहित्य माला के अन्य पुष्प

1. रधिया लौट आई	कमला रत्नम्
2. आग और पानी	डॉ० प्रभाकर माचवे
3. मेरे खेत में गाय किसने हांकी ?	जोगेन्द्र सक्सैना
4. नई जिन्दगी	डॉ० गणेश खरे
5. बिटिया का गीत	शिव गोविन्द त्रिपाठी
6. समाज का अभिशाप	ब्रह्म प्रकाश गुप्त
7. कल्याण जी बदल गए	अ० अ० अनन्त
8. जीवन की शिक्षा (लोक कथायें)	नारायण लाल परमार
9. शहर का पत्र गांव के नाम	डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'
तथा	
बढ़ते क़दम	विमला लाल